Chapter-7

सप्तम अध्याय

राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों का विविध पक्षों से महत्व तथा उपसंहार

लोक-साहित्य की ओर अब विशेष अध्येता और विद्वान आकृष्ट हो रहे हैं। विश्वविद्यालयों में लोक-साहित्य का विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन किया जा रहा है। समाज-शास्त्र, नृ-विज्ञान, पुरातत्व शास्त्र, प्राचीन इतिहास की लुप्त प्राय: कड़ियों को फिर से जोड़ने के लिये, प्रादेशिक संस्कृति का ज्ञान करने, लोकमानस को दृष्टि में रखकर मनोविज्ञान के क्षेत्र में नई खोज करने तथा और भी अनेक बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिये लोक-साहित्य की सामग्री को विविध कसौटियों के आधार पर परखा जा रहा है। और तो और लोक-संस्कृति के अध्ययन बिना हम शिष्ट संस्कृति को भली भांति पहिचान भी नहीं सकते, क्योंकि इन दोनों संस्कृतियों का बड़ा गहरा और बहुत पुराना अन्तर्संबंध है। इस बात का समर्थन डा० बलदेव उपाध्याय ने भी इस प्रकार किया है - `` लोक-संस्कृति शिष्ट संस्कृति की सहायक होती है। किसी देश के धार्मिक विश्वासों, अनुष्ठानों तथा क्रियाकलापों के पूर्ण परिचय के लिये दोनों संस्कृतियों में परस्पर सहयोग अपेक्षित रहता है।``[1] लोक-संस्कृति के ज्ञान के लिये लोक-साहित्य से पूरी-पूरी सहायता मिलती हैं। इस आधार पर यही सिद्ध होता हैं कि लोक-साहित्य का महत्व असंदिग्ध भाव से सभी को सहज स्वीकार्य है, क्योंकि जिस समाज में हम रहते हैं उसके अनेकानेक पहलुओं की चर्चा-परिचर्या लोक-साहित्य में ही मिलती है। यहां हम राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों की महत्ता को अनेक दृष्टियों से परखेंगे।

---

१. `समाज` (काशी विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित) वर्ष ४, अंक ३, १९५८, पृष्ठ ४४६ में प्रकाशित लेख से।

श्रृंगारिक लोकगीतों का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व -

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है । राजस्थान के श्रृंगारिक लोकगीतों में इस प्रदेश की सामाजिक चेतना और आदर्श चित्रित हैं । ईश्वर के संबंध में यहां के लोगों का क्या विचार है ? उसका भी विवेचन मिल जायेगा । ईश्वर की शक्ति में यहां के लोग पूर्ण विश्वास करते हैं । लोकगीतों के अध्ययन के बाद यह विदित हो जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति देवी-देवताओं को बिना किसी पूर्वाग्रह के आदर की दृष्टि से देखता है । उसमें शिष्ट-समाज का सा मत-वैभिन्य नहीं है ।`` ईक त्यारी ईश्वर री रांखां, सभी देवने ध्यांवां`` पंक्ति इसका पुष्ट प्रमाण है । सुलोचना के माध्यम से यहां वास करने वाली हर नारी के आदर्श की भावना अभिव्यंजित हुई है । `भाग्यां लागै सूरापन के दाग`` केवल बलजी भरजी धाड़वी के ही शब्द नहीं है अपितु सम्पूर्ण समाज के सभी सदस्यों के आदर्श नारे हैं । यहां की सती स्त्री अपने लिये तो क्या दूसरों की प्राण रक्षा हेतु भी अपने प्राणों की बलि दे सकती है ।[१] छोटे पति की युवा पत्नी के इस संदेश (पति विरत सब थारो, औरतां रांम करै रखवाली) में आदर्श और ईश्वर में प्रगाढ़ विश्वास की भावना का सुन्दर समन्वय हुआ है । नेवा की माता के निम्नलिखित शब्द एक आदर्श माता के गर्व भरे बोल हैं, जिसमें कहा गया है कि यदि मेरा पुत्र युद्ध से विमुख होकर लौट आये तो सूर्य को भी पुन: पीछे लौटना पड़ेगा, क्योंकि उसने तो उसे यही सिखाया था -

`` पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय ।
म्हारो नेवो पाछै भागे, पाछी वावड़े कासव रो मांण ।।``[२]

सामाजिक उत्तरदायित्व को समझने वाली `तेजा` (बगड़ावत गाथा का एक चरित्र) की वीर पत्नी अपने पति को इन शब्दों के प्रयोग द्वारा कर्तव्य

---

१. ``तेरी जान बचाई अपनी हुई देन तैयार ।।`` (सुल्तान शाहजादे रा स्याल)

२. बगड़ावत लोक गाथा

पथ की ओर प्रेरित करती है ।

`` म्हारी साड़ी घाघरा पैर लो खावंद म्हारा।
टके टके री चूड़ी पैर लो हाथ ।
थांरे हाथ री आवव सूंप दो म्हनै ।
म्हूं जावूं सवाई भोज री जांन ।।``

हजार पांचसो वर्ष पहिले राजस्थानी समाज में कैसे कैसे अंधविश्वास, रीति-रिवाज, रूढ़ परम्परायें और मान्यतायें प्रचलित थी उनका ज्ञान भी श्रृंगारिक लोकगीतों से ही होता है । समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिये इन सभी का बहुत महत्व है । लोकप्रचलित मंत्र-तन्त्र संबंधी विश्वासों का ब्यौरा हमें `काला गोरा री भारत, निहालदे सुल्तान लोकगीत, असमान जोगी और कामण के गीतों में सविस्तार मिलता है ।

एक विश्वास यह भी है कि यदि किसी व्यक्ति के अभिमंत्रित आभूषण (मादलिया जो प्राय: चांदी का चकोर या गोल होता है एवं बाजू पर बांधा जाता है या डोरे में पिरोकर गले में डाला जाता है) धारण किया हुआ है तो नजर लगने वाले का कतई असर नहीं होगा । इसलिये दूल्हे को सचेत करते हुये बहिन एक लोकगीत में कहती है -

` वीरा मादलियौ मंतराय ने चौकी बांध ।
नखलियां री मेंहदी राचणी ।``

विवाह के समय तोरण वन्दना की प्रथा है । कुछ वर्षों पूर्व वर की शक्ति-परीक्षा के लिये तोरण को जान बूझकर ऊंचे स्थान पर बांधा जाता था । इसके अतिरिक्त इस संबंध में यह भी मान्यता रही है कि जो तोरण की पहले वन्दना कर देता है यथार्थत: वही दूल्हा होगा । तोरण वन्दना सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न होता था । लेकिन आजकल इस तरह नहीं होता जो लोकगीतों में चित्रित है जिसे ये श्रृंगारिक लोकगीत ही सच्चा रूप बनाकर जीवित रखते हैं ।

कुछ विशिष्ट पर्वों पर पत्नी द्वारा पति का नाम लेने की प्रथा भी है । इन अवसरों पर पत्नी पद्यात्मक रूप में अपने पति के नाम का उच्चारण करती है यथा -

`` मैलां चीरी काकड़ी फिरोखां राल्या बीज ।
महावीरसिंहजी बैगा पधारो मैला रमां तीज ।।

राजस्थानी समाज में व्याप्त दुर्गुणों का विवेचन भी लोकगीतों में मिलता है । कुछ कुरूतियां और बुरी परम्परायें हमारे समाज में घर कर गई हैं । श्रृंगारिक लोकगीतों में इनका पूर्ण विरोध किया गया हैं । इन कुरूतियों में सबसे घातक है - अनमेल विवाह । वृद्ध-विवाह और बाल-विवाह का यहां काफी प्रचलन रहा है । श्रृंगारिक लोकगीतों में अनमेल-विवाह की बहुत ही हंसी उड़ाई गई है । इस पर लोकगीतों में कटु व्यंग्य किये गये हैं । उदाहरणरूप में एक `लूर` प्रस्तुत की जा रही है जिसमें यह वर्णित है कि अनमेल विवाह का प्रमुख कारण क्या है ?

`` भंवरजी परणीजण जावै साव बोखा रे
मती परणाजो हां हां मती परणाजो
ऊमर री कागदियो लिख देवूं रे
मती परणाजो - - -
बूढ़ो परणायो, हां हां, बूढ़ों परणायो
बाबलियो दमड़ा रो लोभी रे
बूढ़ो परणायो ।``

समाज में भ्रष्टता, अत्याचार और शोषण का प्रचार करने वालों की भी श्रृंगारिक लोकगीतों में भर्त्सना की गई है । ``राधा ओ थारो चुड़लो चिलकणो, साधूड़ां रो अवर सभावे`` , से भोगी साधुओं की ओर संकेत किया गया है ।

`` म्हारे लारै सिपाईड़े रो हेरो ।
पियाजी म्हनै एकल्ड़ी मत मैलो ।।

में तत्कालीन राजकीय अव्यवस्था और विलासी ठाकुरों की वासना की शिकार मजदूरिनों की दयनीय दशा को प्रकट किया गया है ।

` जंवाई ` को गाई जाने वाली एक `गाल` में पुरूषों की प्रवर-वृत्ति की भर्त्सना की गई है । इसमें पुंश्चली स्त्रियों की अपेक्षा पतिव्रता नारी को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है । जो दृष्टव्य है -

`` घर मैल घर मालियो, घर है पंखा साल ।
बरजो बाईजी सा रे वीर नै टूटी टपरी क्यूं जाय ।।``

.....

`` घर डीगी घर पातली, घर चन्दा बदनी नार ।
बरजो बाई सा रै वीर नै पर नारयां क्यूं जाय ।।``

इसमें `टूटी टपरी` लाक्षणिक प्रयोग है । इस प्रकार हम देखते है कि पारिवारिक संबंधों समाज के नैतिक उत्तरदायित्वों एवं वैधानिक मान्यताओं की दृष्टि से श्रृंगारिक लोकगीतों का अद्वितीय महत्व है । इन गीतों के अध्ययन से सम्पूर्ण समाज का हमें ज्ञात हो जाता है । समाज की अच्छाइयों और बुराइयों का आभास भी श्रृंगारिक लोकगीतों से हो जाता है । समाज की प्राचीन और अर्वाचीन स्थिति का पता लग जाता है । इनके पठन पाठन से सामाजिक मान्यताओं, विचारों, रीति-रिवाजों, अंध-विश्वासों, प्रथाओं और आदर्शों का परिचय एक स्थान पर ही मिल जाता है । समाज के राजनैतिक और आर्थिक पहलुओं के संबंध में भी श्रृंगारिक लोकगीतों में अभिव्यक्ति हुई है । समाज के धर्म और सामाजिक, नैतिक मूल्यों की स्थापना भी इन गीतों के द्वारा ही हुई है । निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि राजस्थानी श्रृंगारिक-लोकगीत एक ऐसा विशाल दर्पण है जिसमें राजस्थानी समाज का एक एक कोना स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है ।

श्रृंगारिक लोकगीतों का ऐतिहासिक महत्व -

श्रृंगारिक लोकगीतों में राजस्थान के इतिहास की सामग्री इतस्तत: बिखरी पड़ी है । इन खोये हुये सूत्रों को एकत्र करने की महती आवश्यकता है । श्रृंगारिक लोक कथात्मक गीतों में ऐतिहासिक सामग्री अधिक मिलती है । कई महत्वपूर्ण घटनायें ऐसी हैं जिसका इतिहास में कहीं उल्लेख मात्र भी नहीं किया गया है, परन्तु उनका विवेचन श्रृंगारिक लोकगीतों में हुआ है । इतिहास में अनेक घटनाओं का वर्णन सही रूप में नहीं किया जाकर उन्हें दूसरा ही रूप प्रदान कर दिया गया है, जबकि श्रृंगारिक लोकगीतों में ऐसा नहीं हुआ है । इतिहास लेखकों पर तत्कालीन नरेशों का पूर्ण प्रभाव रहा है । ऐसी अनेक कहावतें और कहावती दोहे हैं जिनमें ऐतिहासिक तथ्यों की ओर संकेत किया गया है । वीरों की जीवनी का चित्रांकन इतिहास ने फिर भी कर दिया है पर प्रेमियों की ओर उन्होंने आंख उठाकर भी न देखा । उनके पावन प्रेम का संदेश तो लोकगीतों ने ही दिया है । लोकगीतों में वर्णित इन व्यक्तियों और घटनाओं का ऐतिहासिक महत्व है, जिस ओर इतिहासकारों का ध्यान जाना चाहिए । आज ये पात्र जन-जन के कंठहार है और प्रत्येक नायक-नायिका के संबोधन रूप में समाज में विद्यमान है उन्हें श्रृंगारिक गीतों ने ही सुरक्षित रखा है । बाघामारमली, ऊमादे भटियाणी, जोधपुर नरेश सातलजी और घुड़ले खां की घटना अंग्रेजों से मिलकर जोधपुर नरेश ने आऊवा गांव पर आक्रमण करने को सेना भेजी उससे संबंधित घटना, भरतपुर के महाराजा रणजीतसिंह (१८०४) की शरण में आये जसवन्तराव होल्कर से संबंधित घटना, १८४३ से १८५६ तक अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने वाले अमरकोट के राणा रतनसिंह से संबंधित घटनायें स्वाधीनता संग्राम के सेनानी शूरवीर डूंगजी - जवारजी से संबंधित घटनायें आदि के संबंध में जानकारी में लोकगीत ही देते है । इन महान चरित्रों के संबंध में शोध होनी चाहिये ।

`` रतनराणा `` नामक गीत में अमरकोट के राणा रतनसिंह और ``भटियाणी राणी`` के प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है । राणा अपने अंग्रेज शत्रु को मारकर फांसी पर लटकाया था । उसकी रानी इसी आशा में है कि वह पुनश्च लौटकर आवेगा - तभी तो वह कहती है -

अमरांणै में घोर अंधार
हां रे म्हारा सायर सोढा, अमरांणै में घोर अंधार
बिलखा नै लागै मैल मालिया
हो म्हारा रतनराणा अेकर तौ अमरांणै पाछो आव ।

ऐतिह्यवृत्त प्रधान प्रेम कथात्मक गीतों में नायक-नायिकाओं का न्यूनाधिक संबंध राजघरानों से रहा है अत: उनके प्रेम का उल्लेख इतिहास में भी हुआ है । पर बेचारी निम्न जातियों के प्रेमी-युग्मों का उल्लेख कौन करता ? उनकी प्रेम-कथाओं को तो श्रृंगारिक लोकगीतों ने ही संजीवनी शक्ति प्रदान की है । इतिहासकारों ने इनके प्रेम को विस्मृत करने की असफल चेष्टा की पर लोक के प्रत्यय में पले इस अनश्वर प्रेम को कौन भुला सकता है ? इसे इन गीतों ने ही अपने क्रोड में शाश्वत रखा ।

उमादे भटियाणी का उज्जवल चरित्र राजस्थानी श्रृंगारिक गीत में उजागर हुआ है । उमादे जैसलमेर के रावल लूणकरण की पुत्री थी । इसका विवाह वि० सं० १५९३ में मारवाड़ के राव मालदेव से हुआ था । इसके साथ दहेज में दासी भारमली दी गई थी जिसकी सुन्दरता पर राव मालदेव रीझ गया । राव ने उमादे की उपेक्षा की तो वह रूठ कर अपने पीहर चली गई और रावजी के सं० १६१९ के मरने पर ही जोधपुर आ कर उनके साथ सती हुई । राजस्थानी जनता में रूठी राणी के नाम से उमादे का गीत गाया जाता है जिससे यह ऐतिहासिक पक्ष उजागर होता है -

राड़ विचाले ए उमादे राणी, पीपली,
जीरा है अड़बड़ पान,
एक ज पानो ए उमादे राणी तोड़ियो,
चुप चुप पड़े रे मजीठ

थें तो घर जावो ए उमादे राणी आपरे
म्हांरे तो महलो ए मारमली दासी रम रही ।
कगमा महलां ए उमादे राणी ऊतरी
जड़िया है बजड़ किंवाड़ ।

एक लोकगीत हाड़ा राव फतमल सम्बन्धी मिलता है । इस गीत में हाड़ा राव और टोड़ा की नागर ब्राहमणी सम्बन्धी प्रेम का चित्रण हुआ है -

फतमल तूं ही है हाड़ौती रो राव,
हुं रे टोड़ा री नागर बामणी रे ।
पाणीड़े गई थी रे तलाव,
लसकर आयो रे हाड़ा राव रो ।

... ...

लाल चूड़ौ पहिराय कोई न जांणो रे गंगापार कीयौ ।
मोने है चूड़ा री खांत, चूड़ौ मंगावो हस्तीदांत रो ।
आगरा नो घाघरो मंगाव, सालू तो मंगावो सांगानेर रो ।
रहो तो रंगधूं गुलराब, चालो तो करूं रे साथे चूरमो ।
रहो तो पहिरूं दखणी रो चीर, चालो तो पहरूं रे
सालु सोवणो ।
रहो नी आज नी रे रात, रात रमी ने वहणो रे चाल ज्यो ।
लाख टकां री थांहरी मूंछ, कोड़ टकां री मांहरी रातड़ी ।
पहिरूं दखणी रो चीर, ऊपर विराजै पीली पागड़ी ।।

श्रृंगारिक लोकगीतों का राष्ट्रीय महत्व -

राजस्थान के आदर्श जीवन में एक ओर प्रेम की भावना प्रबल रूप में है तो दूसरी ओर वीरता, त्याग, बलिदान तथा कर्तव्य-परायण की महान् भावना है । राजस्थानी सिपाही सदैव देश-सेवा और देश-प्रेम में मतवाला होकर लड़-मरने के लिये उद्यत रहा है तो अवकाश के क्षणों में उसने जीवन का आनन्द भी भरपूर रूप में प्राप्त किया है । कठोर दिखाई देने वाले राजस्थानी जीवन में भीतर ही भीतर रसिकता रही है । किन्तु रसिकता की चरम सीमा में भी राजस्थानी वीर अपने कर्तव्य के प्रति सदैव जागरूक रहा है । यही कारण है कि कर्तव्य की पुकार होने पर वह अपनी प्रिया को विरह-बिलखती छोड़कर चल दिया है -

' आज सखी हम यूं सुण्यो,
पो फटक पिय गौण ।
पौ अर हिवड़े होड़ है,
पहली फाटे कौण ।।

नायिका के हृदय और 'पौ' में पारस्परिक होड़ लगी है कि पहले कौन फटता है ? कितनी मार्मिक एवं हृदय-स्पर्शिनी व्यंजना है । भारतीय संस्कृति में पली नारी वासना के लिये व्यथित नहीं, वह तो अपने प्रियतम से प्राप्तव्य आदर की अधिकारिणी है । इसीलिये भावना से कर्तव्य को महान् मानकर अपने प्रियतम को देश-सेवा के लिये हंसते हंसते विदा करती है जो सारे देश के लिये आदर्श रूप बनकर अबला नहीं सबला के सामर्थ्य का द्योतन कराती हैं । भला ऐसे आदर्श प्रेमियों को लोक कभी विस्मृत कर सकता है ? आज के युग में होने वाले प्रेम-विवाहों का प्रतिनिधित्व शताब्दियों पूर्व ऐसे प्रेमी युगल कर गये हैं । राजस्थानी प्रेम कथात्मक गीतों में नागजी, रतनराणो, निहालदे, मूमल, काछबो, पनलोपरदेसी रायधण

आदि प्रसिद्ध हैं । उक्त गीतों के नायक - नायिकाओं का उज्जवल चरित्र राष्ट्रीय महत्व का है ।

राजस्थानी श्रृंगारिक लोक-गीतों में अनेक प्रसंगों में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के स्वर भी सुनाई देते हैं । ऐसे गीतों में राष्ट्रवीर रतन राणा का प्रेम गीत मुख्य है । रतनराणा को एक अंग्रेज की हत्या के आरोप में फांसी दी गई थी ।

मातृभूमि का मनोरम सौन्दर्य राजस्थानी श्रृंगारिक लोकगीतों में पूर्णरूपेण व्यक्त किया गया है और गाया गया है -

१- वाल्हो लागे छै देसड़ो देसड़ो,
किम कर जावूं परदेस, वाल्हा ओ ?
ऊंचा ऊंचा राणाजी रा गोखड़ा,
नीचे म्हारे पीछोला री पाल, वाल्हा ओ ।

२- बादल छाया देश में, नदियां नीर हिलोर,
बादल चमके बीजली, चमक-चमक झड़ लाय ।

भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है । कृषि का मुख्य आधार यहां वर्षा ही रही है । अतएव वर्षा ऋतु प्रारंभ होते ही राष्ट्रीय जीवन में हर्षोल्लास स्वाभाविक है । किसानों के ``अधिक अन्न उपजाओ`` राष्ट्रीय अभियान में भगवान शिव और कृष्ण भी सहयोगी बन जाते हैं -

सुरंगी ऋतु आई म्हारे देश,
भली ऋतु आई म्हारे देश ।
मोटी-मोटी छांट्यां ओसरयो ए बादली,
ओसरयो ए बादली, जोड़ा ठेलम ठेल ।
सुरंगी ऋतु आई म्हारे देश,
भली ऋतु आई म्हारे देश ।
ईसर बीजे बाजरो ए बादली ।
बाजरो ए बादली ।
कांनू बीजे मोठ, मेवा मिसरी
सुरंगी ऋतु०

श्रृंगारिक लोकगीतों का कलात्मक महत्व -

भाव पक्ष की दृष्टि से राजस्थान में श्रृंगारिक लोकगीत बहुत ही समृद्ध हैं । सभी रसों के उत्कृष्ट उदाहरण हमें इसमें मिल जाते हैं । अनुभावों और संचारियों के उदाहरणों की भी कोई कमी नहीं है । पर विशेष रूप से राजस्थानी श्रृंगारिक लोकगीतों में श्रृंगार, वीर, हास्य, करुण और शांत रस की प्रधानता रही है ।

प्रेम में ही मानव-जीवन का श्रेय निहित है । दाम्पत्य-प्रेम को सर्वोत्कृष्ट बताया गया है । श्रृंगारिक लोकगीतों मे भी स्थान स्थान पर और विविध रूपों में प्रेम-भाव की अभिव्यक्ति हुई है । इसमें दाम्पत्य-प्रेम, दो प्रेमियों के प्रेम, मातृ-प्रेम और वात्सल्य प्रेम सभी को उचित स्थान मिला है ।

प्रेम में सौन्दर्य वर्णन का भी महत्व रहा है । नायक-नायिका के रूप वर्णन की परिपाटी रही है । सौन्दर्य चित्रण में प्राय: परम्परित उपमानों का ही प्रयोग किया गया है । श्रृंगारिक लोकगीतों में हमें स्त्री-सौन्दर्य और पुरुष-सौन्दर्य दोनों के उदाहरण मिल जाते हैं । यहां एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें परम्परित उपमानों का उल्लेख कर परोक्ष रूप से नारी के सौन्दर्य की कलात्मक अभिव्यक्ति की गई है -

`` खेलवा सिकार गया देखी एक नार,
रूप में अपार वा चात्रक सी नारी है ।
बंबी बिन सर्प आय, केल बिना सूवा वहां
बागू बिन कोयल,वहां बोल रही प्यारी है ।

समन्दर बिन हंस वहां करता किलोल खूब
चीता और मिरघा दोनूं केल करे भारी है
चलाकीं सूं मेरा चित्त चोर लियो,
नैन की कटारी मेरे कलेजा में मारी है ।।[१]

कई वर्णन ऐसे भी मिल जाते है जिनमें आभूषण-सज्जित एवं प्रसाधित युवती के रूप का चित्रण किया गया है । ऐसा ही एक उदाहरण दृष्टव्य हैं, जिसमें राजस्थानी आभूषणों के नाम भी गिनाये गये हैं -

कैरणफूल सिर आड बिराजै गल मोतिया को हार ।
गल मोतियन को हार क बेसर सोवणी
बिंदी लाल गुलाल छैल मन मोवनी
बिंदी लाल गुलाल केसर को लीन्हो काजल सार ।
तिलड़ी ऊपर तेवटो स कोई फेरुं नवसरहार
फेरुं नवसर हार रूप की बहार है
जिगमिग जोत ज दूर दियो करतार है ।[२]

दृष्टा पर ऐसे रूप का प्रभाव भी पड़ता है । रूप कितना प्रभाव करता है, यह इन पंक्तियों में उल्लिखित है -

देखे हमारो रूप इन्दर आप सरमावै
उड़ता तो पंछी देख नीचा आंण गिर जावै

श्रृंगारिक लोकगीतों में प्रेम-भाव से संबंधित सभी बातों का विवेचन मिलता है । प्रथम दृष्टि-प्रेम, प्रिय के लिये सर्वस्व उत्सर्ग कर देने की बलवती भावना, हर समय प्रिय के दर्शन करते रहने की कामना, मान-प्रसंग, यौवनोन्मत्ता, विरह-वर्णन, बारहमासा वर्णन, विरह को उदीप्त करने वाले आधार, संदेश-प्रेषण, मृदु उपालंभ, सवतिया डाह आदि सभी से संबंधित अनेक उदाहरण श्रृंगारिक लोकगीतों में भरे पड़े है । इस संबंध में कुछ उदाहरण

---

१. ब्रजमुकुट पद्मावती का गीत
२. पन्ना वीरमदे का गीत

प्रस्तुत है -

उत्सर्ग की भावना -

`` बाबल थारै आंगणै भला पधारिया पीव ।
अवर बधाई कांई करूं पल पल वारू जीव ।।`

`` फूल गुलाब रौ हूवती आलीजै रै पेव कुणगे पर रैती
तेल चपेल रौ हूवती मिजाजी रे बालां में रैती
मोजड़ी पगल्यां री हूवती आखै दिन पगल्यां में रैती ।।``

मान-प्रसंग -

` बारै बारै बरसां सूं रांमजी पधारिया
खिड़की खोली नी राधा रांणी मेल री ओ राम
खिड़की तो सांवरिया लाल किण विध खोलूं
रातै खेल्या जठै खेलौ ओ भगवान ।`

यौवन-मत्ता -

`` अंग न मावे कांचली, कड़ियां रलकन्ता केस ।
सूती न मावे सेज में, ज्यां रा सजन रैवे परदेस ।।``

उद्दीपन -

` बिजली दमक बदन को तावे, मदन सतावे धिरक जियो
नित महलां पर जाय सुणावे शब्द पपीहो बैर कियो
निश बिरखा बिच मोर मची, कर शोर फाड़ती मेरा हियो ।।`

सदेश-प्रेषण -

` पंथी हाथ सदेसड़ो स रे बाबल लग पूंचाय ।
ओलूं रो कागद लिखूं स म्हारो लेसूं बीर बुलाय ।। `

सवतिया-डाह -

` नैनी नैनी टिपकियां म्हारी नैनी नणदल देवे रे
मोटोड़ो पतासो म्हारी सौक देवे रे, बलते कालजिये
रे कालजिये करोत वेगी रे बलते कालजिये । `